सुख शांति समृद्धि विश्व विद्यापीठ

सुख शांति समृद्धि पत्रिका संतो और महानुभावों द्वारा प्रेरणा देने के अलावा सम्माननीय विशेषज्ञ प्रतिभाओं के मार्गदर्शन में सुख शांति समृद्धि प्रेरणा विश्व विद्यापीठ हरेक पीढ़ि के जीवन में सुख शांति समृद्धि का निर्माण हो इसलिए ऑन लाइन ऑफ लाइन विभिन्न प्रकार के छोटे बड़े अभ्यासक्रम का आयोजन करेगी और सर्टिफिकेट भी प्रदान करेगी (संपर्क: 9324446487)

RNI NO. MHHIN / 2012/ 47712

सुख शांति समृद्धि

संपादकः जीतु सोमपुरा

सुख शांति समृद्धि प्राप्त करने की कला सीखाती विद्यापीठ

वर्ष १४ विशेषांक हिन्दी मासिक मुंबई अक्टूबर २०२५ संपादक : जितू सोमपुरा सहायक संपादक : आकाश सोमपुरा पृष्ठ – ८ निःशुल्क

ना ये चाँद होगा, ना तारे रहेंगे मगर हम हमेशा तुम्हारे रहेंगे...

देश विदेश में प्रसिद्ध ब्रह्मकुमारीज़ संस्थान के पवित्र इतिहास का सोनेरी पृष्ठ – आध्यात्मिक प्रतिभा महासचिव कर्मयोगी राजयोगी भ्राता बृजमोहन जी

आध्यात्मिक ज्ञान और विनम्रता के प्रतीक बी.के. बृजमोहन : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

भाईसाहब आध्यात्मिक ज्ञान और विनम्रता के प्रतीक थे। उनकी निस्वार्थ सेवा ने दुनिया भर के अनगिनत लोगों के जीवन को प्रभावित किया। ब्रह्माकुमारीज़ के महासचिव के रूप में उन्होंने अपने व्याख्यानों, रिट्रीट, और लेखों के माध्यम से लाखों लोगों को प्रेरित किया। मानवीय मूल्यों और शांति को बढ़ावा देने की उनकी विरासत लोगों को शांति और पवित्रता के मार्ग पर ले जाती रहेगी।

– राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

बृजमोहन भाई ने शांति, सद्भाव, और सार्वभौमिक भाईचारे का संदेश फैलाया : नरेंद्र मोदी

अपनी प्रेरक शिक्षाओं, शांत व्यवहार और अपने आचरण से, राजयोगी बृजमोहन भाई ने शांति, सद्भाव, और सार्वभौमिक भाईचारे का संदेश फैलाने में बहुत बड़ा योगदान दिया। ब्रह्माकुमारीज़ के महासचिव के रूप में राजयोगी बृजमोहन भाई के अमूल्य कार्यों ने संस्था के विकास में योगदान दिया। आध्यात्मिक उत्थान को बढ़ावा देने के उनके प्रयास संस्थान के लिए प्रेरणा के स्थायी स्रोत बने रहेंगे।

– प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

बृजमोहन जी का जीवन सादगी, ज्ञान, और आध्यात्मिक सेवा के प्रति अटूट समर्पण का उज्ज्वल उदाहरण : राम नाथ कोविंद

बृजमोहन जी का जीवन सादगी, ज्ञान, और आध्यात्मिक सेवा के प्रति अटूट समर्पण का एक उज्ज्वल उदाहरण था। अपने अथक प्रयासों से उन्होंने समाज के नैतिक और आध्यात्मिक ताने-बाने को मजबूत किया और ब्रह्माकुमारीज संस्थान को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपार पहचान दिलाई।

उनकी शांत उपस्थिति, गहरी अंतर्दृष्टि और कर्मयोग के जीवंत अभ्यास ने असंख्य आत्माओं को सत्य, शांति और निस्वार्थ सेवा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। उनके जाने से जो खालीपन आया है, उसे गहराई से महसूस किया जाएगा, फिर भी उनकी शिक्षाएं और मूल्य पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

– श्री राम नाथ कोविंद (पूर्व राष्ट्रपति)

सबसे अच्छी श्रद्धांजलि शायद यही दे सकते हैं कि हम उनके आदर्शों का अनुसरण करें : दलाई लामा

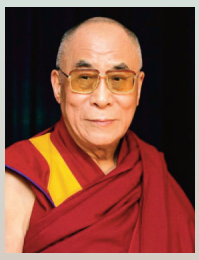

मैं अपने दिवंगत आध्यात्मिक भाई के लिए प्रार्थना करता हूँ और ब्रह्माकुमारी परिवार और उनके असंख्य अनुयायियों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूँ।

उन्होंने स्वयं को दूसरों की सेवा के लिए समर्पित किया। हम उन्हें सबसे अच्छी श्रद्धांजलि शायद यही दे सकते हैं कि हम उनके आदर्शों का अनुसरण करें और जहाँ भी संभव हो दूसरों की सेवा करें।

– दलाई लामा

भारत की वसुधैव कुटुम्बकम भावना को जीवंत किया : डॉ. मोहन यादव

राजयोगी बृजमोहन भाईजी का जीवन आध्यात्मिक चेतना, नैतिक मूल्यो और विश्व कल्याण के लिए समर्पित रहा। गीता ज्ञान के ज्ञाता और भारतीय संस्कृति के प्रखर प्रवक्ता के रूप में आपने देश विदेश में भारत की वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को जीवंत किया। आप का देहावसान समाज और अध्यात्म कुटुम्बकम् की भावना को जीवंत किया। आप का देहावसान समाज और अध्यात्म दोनों ही क्षेत्रों की अपुरणीय क्षति है।

– मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

जीवन के प्रत्येक क्षण को उन्नति, सेवा और शांति हेतु समर्पित किया : पुष्कर सिंह धामी

ब्रह्माकुमारी संस्था के महासचिव एवं वरिष्ठ राजयोगी श्री बीके बृजमोहन भाईसाहब का जीवन सादगी, आध्यात्मिकता और मानवीय मूल्यों के पालन का अद्भुत उदाहरण रहा है। उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को को आत्मिक उन्नति, समाजसेवा तथा विश्व शांति की स्थापना के कार्य हेतु समर्पित किया। ब्रह्माकुमारी संस्था के माध्यम से नि:स्वार्थ भाव से आध्यात्मिक जागृति, महिला सशक्तीकरण, नशा-मुक्ति, शिक्षा एवं पर्यावरण संरक्षण आदि महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

– उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी

हमेशा भ्राता मनमोहन जी के मन में भाव होता था कि जो कुछ बाबा ने कहा है वो मुझे सब कुछ करना ही है : बीके मोहिनी दीदी

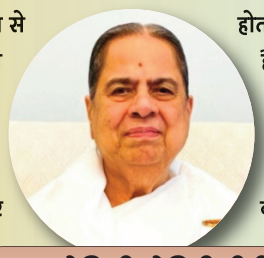

राजयोगिनी मोहिनी दीदी
(मुख्य प्रशासिका - ब्रह्मकुमारीज़)

बी.के. मोहिनी दीदी: भ्राता बृजमोहन जी, जो हमारे इस ईश्वरीय परिवार के मुख्य भाई थे, उन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्था के प्रति बाल्यकाल से अपना जीवन समर्पित करते हुए बहुत बेहद की सारे विश्व में सेवाएं की। आप बहुत अच्छा लिखते भी थे। परंतु सबसे बड़ी बात यह है कि उनमें दया भाव, सबके प्रति सहानुभूति, करुणा, और स्वभाव से वो बहुत ही लाइट हार्टेड थे अर्थात जितने ही गंभीर थे उतने ही बहुत रमणिक थे।

मन में तो उनके प्रति बहुत भावनाएं उत्पन्न हो रही हैं। क्योंकि मैंने जब मेरा जीवन समर्पित किया, उस समय ही भ्राता बृजमोहन जी ने भी जो उनका प्रोफेशन था, उसको शुरू किया था। मैंने यह देखा कि वो हर बात को एक बहुत गहरे तरीके से, जिसमें बहुत-बहुत अर्थ होता था, वैसे ही शब्द वो उच्चारण करते थे। सभी के प्रति उनका व्यवहार बहुत प्रेम का था और हमेशा उनके मन में यह होता था कि जो कुछ बाबा ने कहा है वो मुझे सब कुछ करना ही है। बहुत संगठन किए, महात्माओं के, साधुओं के, पत्रकारोंके,इसतरहकेबहुत-बहुतसंगठन वो करते रहते थे। बेशक उन्होंने देह का त्याग किया है पर ऐसा लगता नहीं है, ऐसा ही लगता है कि वह हमारे साथ है और मैं समझती हूं कि उनका जो चरित्र, उनका जो पार्ट चला, उसकी स्मृतियों से हमारे दिल में उनकी याद बनी रहेगी। मैं अपने दिल से फिर से अपनी श्रद्धांजलि भ्राता बृजमोहन जी को देती हूँ, वे प्रभु के समीप थे और सदा ही रहेंगे।

जब तक भाईसाब सब को हंसाते नहीं थे तो समझते थे कि रिस्पॉन्स नहीं मिला है : राजयोगिनी जयंती दीदी

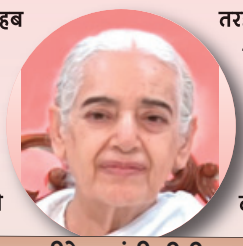

बीके जयंती दीदी
(अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका-ब्रह्मकुमारीज़)

बी.के. जयंती दीदी: भाईसाहब को हम कितनी बातों में याद करेंगे ? उसकी दूरदेशी बुद्धि, उनका कितना गहराई से ज्ञान का मनन-चिंतन अथवा ज्ञान को जिस तरह से रमणीकता से सुनाते थे। मुझे लगता है कि सारे ब्राह्मण परिवार में उस एक आत्मा की ही यह बहुत सुंदर विशेषता थी। जब तक भाईसाहब सबको हंसाते नहीं थे तो समझते थे कि रिस्पांस नहीं मिला है। परंतु गहरी बातें, सबको बाबा के नजदीक लाने वाली बातें, ऐसे सुनाते थे जो दिल को छू लेती थीं। कई भाईसाहब के क्लास हैं जो मैं कभी भूल नहीं सकती। सबसे बड़ी बात तो मैं कहूंगी कि भगवान ने उनको जो दिव्य बुद्धि दी थी उस दिव्य बुद्धि से हर बात को अच्छी तरह से समझ के निर्णय ऐसे लेते थे जो सब उसको स्वीकार कर सकते थे, ऐसे नहीं कि उन्होंने निर्णय लिया और फिर कोई यह कहे कोई वो कहे, नहीं, सभी दिल से स्वीकार करते थे। जिस तरह से भाईसाहब ने दिल्ली में राजनीतिज्ञों की सेवा की और उन आत्माओं को इतना ऊंच उठाया, यह भी एक विशेषता उस आत्मा की ही रही। भाईसाहब की यही चाहना थी कि बाबा को प्रत्यक्ष करना है विश्व भर में, और ब्राह्मणों को भी अपनी कर्मातीत स्थिति को सहयोग देकर पहुंचाना है। तो अब वो कार्य दोनों ही भाईसाहब बाबा के साथ ऊपर से बहुत फास्ट स्पीड से कराते ही रहेंगे। भाईसाहब ने विश्व भर की सेवाएं बहुत सुंदर ढंग से की हैं। मार्गदर्शन देना, सहयोग देना, एम्पॉवर करना, तो सभी के मन में शुभ भावना, शुभकामनाएं हैं।

सुख शांति समृद्धि

सुख शांति समृद्धि प्राप्त करने की कला सीखाती विद्यापीठ

संपादक : जीतु सोमपुरा +91 9324446487

सहायक संपादक : आकाश सोमपुरा

भ्राता बृजमोहन जी ने विश्वभर की सेवा बहुत सुंदर ढंग से की है; वे प्रभु के समीप थे और सदा ही रहेंगे

बृजमोहन भाई जी सम्पूर्ण त्याग मूर्त, तपस्वी मूर्त थे: राजयोगिनी लक्ष्मी दीदी

राजयोगिनी लक्ष्मी दीदी
(बी के मुन्नी दीदी)
(अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका - ब्रह्माकुमारीज़)

बी.के. मुन्नी दीदीः बृजमोहन भाई जी सम्पूर्ण त्याग मूर्त, तपस्वी मूर्त थे। पुरे विश्व की सेवाओं का उनके अंदर बहुत उमंग, उत्साह था और उनकी प्लैनिंग बुद्धि थी। कैसे बाबा की प्रत्यक्षता करें, उसके प्लैन उनके अंदर चलते रहते थे। उन्होंने खूब बाबा की देश-विदेश में सेवा की। मधुबन में आने की उनकी इच्छा भी बाबा ने पूर्ण की, जो वे यहाँ तीन-चार साल रहे। भाईसाहब सदा हमारे साथ हैं और सदा हमारे साथ रहेंगे।

मन में सोचा नहीं था कि इतनी जल्दी वो अव्यक्त स्थिति को पाकर कोई विशेष कार्य करने के लिए जा रहे हैं : राजयोगिनी बीके शशि दीदी

बी के शशि दीदी
(सह मुख्य प्रशासिका-ब्रह्माकुमारीज़)

बी.के. शशि दीदीः बृजमोहन भाईसाहब सूक्ष्म रूप में हम सब के साथ हैं। मन में सोचा नहीं था कि इतनी जल्दी वो अव्यक्त स्थिति को पाकर कोई विशेष कार्य करने के लिए जा रहे हैं। सभी भाई-बहनों के प्रति उनका प्यार और सहयोग रहता था। हर समय वे सेवा की नई योजनाएं बनाते रहते थे। अंत तक भी हर सेवा वो करते रहे, चाहे शरीर कभी-कभी साथ नहीं देता था, फिर भी वे सेवाएं करते रहे और नई सेवाओं के लिए प्रेरणा भी देते रहे। उनके मार्गदर्शन में गीता का भगवान, संत सम्मेलन और राजनीतिज्ञ सेवा प्रभाग के कार्यक्रम बहुत सफल रहे। इतना ही नहीं, यज्ञ के कई बड़े कार्य जिनकी जिम्मेदारी उन्होंने अपने ऊपर ली हुई थी, वे यथार्थ रीति करते थे। खुद भी वे अथक बन कर कार्य करते थे और दूसरों में भी उमंग-उत्साह भर कर उनसे कराते थे। आदरणीय भाईसाहब सूक्ष्म रूप में हमारे साथ हैं और दादियों और वरिष्ठ भाइयों के साथ वे हमें प्रेरणाएं देते रहेंगे।

भ्राता बृजमोहन जी ने विश्वभर की सेवा बहुत सुंदर ढंग से की है; वे प्रभु के समीप थे और सदा ही रहेंगे बी.के. संतोष दीदी

बी के संतोष दीदी
(सह मुख्य प्रशासिका - ब्रह्माकुमारीज़)

बी.के. संतोष दीदीः हमारे बृजमोहन भाई इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के स्तम्भ थे। आज वे हमारे बीच साकार में नहीं हैं परन्तु उनकी लगन, उनका प्यार, और स्थापना के कार्य में उनका जो दृढ विश्वास था, बाबा से जो उनका प्यार था, वह प्यार है और हम ऐसा समझते हैं कि वे हमारे साथ ही हैं और अंत तक हमको मदद करते रहेंगे। भले बृजमोहन भाई ने साकार शरीर छोड़ दिया, परन्तु उनके गुण और विशेषताएं हम कभी भूल नहीं सकेंगे। सबसे बड़ी बात हमने बृजमोहन भाई में देखी - जिस प्रकार बाबा ने माताओं को, कन्याओं को आगे रखा, उनको ज्ञान का कलश दिया और विश्व कल्याण के निमित रखा, वैसे ही बृजमोहन भाई हमेशा बहनों को आगे रख के और खुद बैकबोन बन कर के सेवाएं करते रहे। वे हमेशा कहते रहे कि आप बहनें सामने रहो तो कोई भी विघ्न हमें रोक नहीं सकता। उनकी विशेषताओं को सामने रखते हुए, धारण करते हुए हम आगे बढ़ेंगे, यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

हनुमान रूप भी मैं बृजमोहन जी को देख रही हूँ, क्योंकि अनेकों को लक्ष्य देकर नया जीवन दिया : राजयोगिनी सुदेश दीदी

बी के सुदेश दीदी
(सह मुख्य प्रशासिका - ब्रह्माकुमारीज़)

बी.के. सुदेश दीदीः बापदादा के नैनों के नूर, यज्ञ के सिरमौर, पांडवों में एक स्तम्भ, और जीवन की धारणाओं में जैसा लक्ष्य वैसे लक्षण, साकार बाबा के हृदय में विराजमान, मम्मा की पालना लेकर सरस्वती स्वरुप स्वयं बनकर ज्ञान, योग, धारणा और सेवा, चारों ही विषयों को बहुत गहराई से और ऊंचाई से सबके साथ साझा किया। आप बड़े भाई के रूप में सबको पालना देने वाले, और दोस्त के रूप में सबके हृदय की बात को समझ कर उनको आगे बढ़ाने वाले, और शिव शक्तियों को भी उसी रूप में आगे रखने वाले, आप ने देश में, विदेश में हर देश में सेवा की और अपने यादगार छोड़े। मुझे तो ऐसा महसूस होता है कि देवताओं की महिमा में इनकी ही यादगार गणेश के रूप में देखें, तो हर बात की आदि करने में, श्रीगणेश करने में, प्लानिंग में आप गणेश स्वरुप, समर्पण स्वरुप, अपनी बुद्धि को भी समर्पित किया, स्वमान को भी समर्पित किया। यज्ञ में किसी भी प्रकार की परिस्थिति आई, आपने विघ्न विनाशक बन कर यह प्रैक्टिकल पार्ट बजाया। हनुमान रूप भी मैं देख रही हूँ, क्योंकि अनेकों को लक्ष्य देकर नया जीवन दिया। पहाड़ को उठाने जैसे बड़े से बड़े कार्य आपने सहज रीति से किये। ऐसे बाबा के दिव्य रतन को, हीरो पार्ट बजाने वाले बृजमोहन भाई जी को हम ज्ञानसरोवर की तरफ से और अपनी तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

अव्यक्त बापदादा ने बृजमोहन भाईसाहब को समय प्रति समय तीन प्राइज दिए : राजयोगिनी आशा दीदी

बी के आशा दीदी
(निर्देशिका, ओम शांति रिट्रीट सेंटर, गुरुग्राम - ब्रह्माकुमारीज़)

बी.के. आशा दीदीः बाबा से प्राइज लेना बहुत काम आत्माओं के भाग्य में है। अव्यक्त बापदादा ने बृजमोहन भाईसाहब को समय प्रति समय तीन प्राइज दिए। एक प्राइज था संयुक्त राष्ट्र संघ के कल्चर ऑफ़ पीस प्रोजेक्ट के अंतर्गत भारत में अधिकतम हस्ताक्षर इकट्ठे करने के लिए। दूसरा प्राइज बाबा ने दिया जब भाईसाहब ने यज्ञ पर लगा कर हटाने के लिए इनकम टैक्स केस किया था और केस जीते थे। तीसरा प्राइज बाबा ने दिया जब भाईसाहब के प्रयासों से भारत सरकार ने ब्रह्मा बाबा की डाक टिकट निकाली थी।

भाईसाहब बुद्धिजीवी थे और ज्ञान की चर्चा उनका शौक था। कोई भी उनसे मिलने आता था तो वे सिर्फ ऊपर-ऊपर से बात नहीं करते थे। उसे ज्ञान अवश्य सुनाते थे। भाईसाहब को अपना लक्ष्य भी बहुत स्पष्ट रहता था। जो लक्ष्य वे रखते थे उस पर पूर्ण रूप से एकाग्र होकर उसे प्राप्त करते थे।

भाईसाहब बहनों का बहुत सम्मान करते थे और बहनों को सदा आगे रखते थे। भाईसाहब जब संत सम्मलेन करते थे तो लोग कहते थे की भाईसाहब उसके संयोजक हैं। भाईसाहब कहते थे कि संयोजक ये बहनें हैं, मैं तो सिर्फ सेवा करता हूँ। उनकी यह नम्रता लोगों का दिल जीत लेती थी। उनमें निर्भयता, निश्चय, और दृढ़ता भी बहुत थी। किसी भी कार्य को करने में वे कहा करते थे कि मैं अकेला ही काफी हूँ - मेरे साथ सर्वशक्तिवान है।

यज्ञ के एक बहुत जबरदस्त आधार स्तम्भ ने अपनी कर्मातीत अवस्था को प्राप्त कर लिया है।

राजयोगी बृजमोहन भाई ईश्वरीय सेवाओं के अनमोल रत्न थे : भ्राता मृत्युंजय जी

भ्राताश्री ने गीता ज्ञानदाता परमात्मा शिव के दिव्य संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के लिए संत-महात्माओं और विद्धानों को मधुबन सहित अनेक स्थलों पर आमंत्रित कर सार्थक संवाद और आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के पूर्व महासचिव बी.के. बृजमोहन भाई एक अत्यंत सरल, दिव्य और प्रेरणादायी व्यक्तित्व थे। उनके जीवन में ज्ञान की गहराई, योग की शक्ति, और सेवाभाव की सुंदरता सहज रूप से झलकती थी।

उनका संकल्प था कि ईश्वरीय ज्ञान हर आत्मा तक पहुँचे। इसके लिए उन्होंने कई नवीन सेवाविधियाँ विकसित कीं और देश-विदेश में अनेक कार्यक्रमों का सफल संचालन किया। उनकी वाक्-कला, संगठन क्षमता और निर्मल दृष्टिकोण ने हजारों आत्माओं को नई प्रेरणा दी।

संस्था के प्रति उनका सम्मान, प्रेम और सहयोग का भाव अत्यंत गहरा था। उनकी विनम्रता, निमित्त और सेवाभाव ने उन्हें सबके हृदय में विशेष स्थान दिलाया। यही कारण था कि वे संस्था के महासचिव पद पर सुशोभित हुए।

पिताश्री ब्रह्मा बाबा और मातेश्वरी जगदंबा जी की पालना में उन्होंने अपने जीवन को ईश्वरीय गुणों से सजाया। अव्यक्त मुरलियों में परमात्मा ने उन्हें विशेष आशीर्वाद और प्रेरणा प्रदान की।

दिल्ली के लालकिला के समीप उन्होंने ईश्वरीय ध्वज फहराया और माया पर विजय का वरदान पाया। वहाँ उन्होंने कई बार भव्य मेले, प्रदर्शनियाँ और योग कार्यक्रम आयोजित किए, जिनमें देश के नेता, संत और विद्धान शामिल हुए। इससे संस्था का गौरव और अधिक बढ़ा।

उन्होंने गीता ज्ञानदाता परमात्मा शिव के दिव्य संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के लिए महामंडलेश्वर, संत-महात्माओं और विद्धानों को मधुबन सहित अनेक स्थलों पर आमंत्रित कर सार्थक संवाद और आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया। ऐसे महान आत्मा, बाबा के अनन्य रत्न, सदा हमारे हृदयों में विराजमान रहेंगे। उनका जीवन और सेवाएँ हमें निरंतर दिशा, प्रेरणा और शक्ति देती रहेंगी।

शत-शत श्रद्धांजलि।

बी.के. मृत्युंजय भाई
(अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारी)

सुख शांति समृद्धि

सुख शांति समृद्धि प्राप्त करने की कला सीखाती विद्यापीठ

संपादक : जीतु सोमपुरा +91 9324446487 सहायक संपादक : आकाश सोमपुरा

प्रतिष्ठित बीके बृजमोहन भाई ब्रह्माकुमारीज़ की आध्यात्मिक सेवाओं के एक सशक्त स्तंभ थे : भ्राता करुणा भाई जी

ब्रह्माकुमारीज़ एक आध्यात्मिक संस्था है जिसका मुख्यालय राजस्थान के माउंट आबू में स्थित है और जिसकी शाखाएँ १३० से अधिक देशों में सक्रिय हैं। यह संस्था राजयोग मेडिटेशन सिखाती है, जिसके माध्यम से विश्वभर में लाखों लोगों ने अपने जीवन में अधिक शांति, आनंद और अर्थपूर्णता का अनुभव किया है।

राजयोगी बी. के. बृजमोहन भाई ब्रह्माकुमारीज़ की आध्यात्मिक सेवाओं के एक सशक्त स्तंभ थे, जिन्होंने संस्था की प्रतिष्ठा को ऊँचाइयों तक पहुँचाने और समाज तथा सरकार के उच्चतम स्तरों पर उसे आदर एवं मान्यता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । बी. के. बृजमोहन भाई एक सम्मानित और लोकप्रिय प्रेरक वक्ता, लेखक और प्रसारक थे। उन्हें गहरी आध्यात्मिक बातों को सरल, रोचक और हँसमुख ढंग से समझाने की विशेष कला आती थी।

पवित्रता, शांति और आत्मिक प्रेम पर आधारित जीवन ही सच्चा जीवन है संदेश का प्रसार विश्वभर में फैलाने के लिए अपना जीवन समर्पित किया

ब्रह्माकुमारीज़ के महासचिव, राजनेताओं की सेवा करने वाले विभाग के अध्यक्ष, और संस्था के अकाउंट्स विभाग के प्रमुख के रूप में उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ निभाईं, फिर भी वे सदैव विनम्र, सरल और मिलनसार बने रहे।

बी. के. बृजमोहन भाई की आध्यात्मिक यात्रा १९७३ में आरंभ हुई, ९ अक्टूबर, २०२५, को अपनी भौतिक देह का त्याग कर बापदादा की गोद में समा गये।

जब वे एक युवा स्नातक के रूप में ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आए। चार्टर्ड एकाउंटेंट की उपाधि प्राप्त करने के बाद उन्होंने १७ वर्षों तक फर्टिलाइज़र कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (Fertilizer Corporation of India - Govt. of "India Undertaking) में कार्य किया, और

१९७३ में उप वित्त प्रबंधक (Deputy Finance"Manager) के पद से त्यागपत्र देकर पूर्ण रूप से आध्यात्मिक सेवाओं में स्वयं को समर्पित कर दिया।

ब्रह्माकुमारीज़ के साथ अपने सात दशकों की यात्रा में वे मुख्यतः दिल्ली में रहे, जहाँ उन्होंने संस्था का यह संदेश फैलाने में अपना जीवन समर्पित किया कि पवित्रता, शांति और आत्मिक प्रेम पर आधारित जीवन ही सच्चा जीवन है। उनका पक्का विश्वास था कि समाज और देश को आगे बढ़ाने के लिए सबसे पहले इंसान के चरित्र का शुद्ध होना जरूरी है। राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास ही वह सबसे असरदार तरीका है जिससे आत्मा की कमजोरियाँ दूर हो सकती हैं वही कमजोरियाँ जो हर तरह की सामाजिक समस्याओं की जड़ हैं। उन्होंने इस संदेश को समाज के सभी वर्गों तक पहुँचाने के लिए अथक प्रयास किया। इसी उद्देश्य से उन्होंने ३७ वर्षों तक 'Purity' नामक एक मासिक अंग्रेज़ी पत्रिका का प्रकाशन किया, जिसकी लेखमाला विश्वभर के पाठकों के लिए आध्यात्मिक पोषण का साधन बन गई और प्रत्येक अंक की प्रतीक्षा उत्सुकता से की जाती थी।

बी.के. बृजमोहन भाई ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों और विश्वभर में व्यापक यात्राएँ कीं। उन्होंने अनेक स्थानों पर व्याख्यान दिए, राजयोग रिट्रीट्स का संचालन किया, तथा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेकर शांति, मूल्य एवं आध्यात्मिक जीवनशैली को बढ़ावा दिया।

ॐ शांति ।

राजयोगी करुणा भाई जी
(ब्रह्मकुमारीज़ संस्था के महासचिव)

आत्म-उन्नत्ति के लिए हमें सच्चाई का सामना करने और उसे स्वीकार करने की ज़रूरत है ताकि हम खुद में ज़रूरी बदलाव ला सकें

राजयोगी बृजमोहन जी

सत्य नैतिक चरित्र और नैतिक आचरण का एक अनिवार्य तत्व है। व्यक्तिगत संबंधों में, सत्य विश्वास और विश्वसनीयता को बढ़ावा देता है। व्यापक स्तर पर, सत्य के प्रति प्रतिबद्धता सामाजिक समरसता को बढ़ावा देती है, क्योंकि गलत जानकारी के कारण अक्सर गलतफहमियाँ और संघर्ष उत्पन्न होते हैं। न्यायिक व्यवस्थाओं में, सत्य न्याय की कुंजी है।

जीवन के लगभग हर क्षेत्र में, अपने विकल्पों का सही मूल्यांकन करने और सही निर्णय लेने के लिए सच्चाई जानना बेहद ज़रूरी है। आत्म-उन्नत्ति के लिए भी, हमें अपने और अपनी परिस्थितियों के बारे में सच्चाई का सामना करने और उसे स्वीकार करने की ज़रूरत है ताकि हम खुद में ज़रूरी बदलाव ला सकें।

झूठ के युग से सत्य के युग की ओर....

एक समय था जब सत्य समाज की नींव था। सतयुग, या सत्य का युग, समय चक्र के चार युगों में पहला युग है। वह स्वर्णिम युग था जब लोग प्राकृतिक और आध्यात्मिक नियमों के अनुरूप जीवन जीते थे। सदाचार और धार्मिकता आदर्श थे। अपराध या हिंसा का कोई नामोनिशान नहीं था, और इसीलिए सतयुग में अदालतें, जेलें और सेनाएँ नहीं थीं।

त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग में मनुष्य धीरे-धीरे सत्य और सदाचार से विमुख होते गए। जैसे-जैसे उनका भौतिक संसार से संपर्क बढ़ता गया, वे उससे प्रभावित होते गए। उनकी आध्यात्मिक चेतना क्षीण होती गई और एक समय ऐसा आया जब उन्होंने इसे पूरी तरह से खो दिया। यह भूलकर कि वे आत्मा हैं, जिसका मूल संस्कार ही शांति और प्रेम का है, उन्होंने अपनी नश्वर देह को अपनी पहचान बनाना और उसी आधार पर दूसरों से संबंध बनाना शुरू कर दिया। अपनी आध्यात्मिक पहचान के मूलभूत सत्य से अनभिज्ञ, वे अहंकार, लोभ, वासना और क्रोध जैसे दुर्गुणों के शिकार हो गए। समय

के साथ यह आध्यात्मिक पतन तीव्र होता गया और आज हम वर्तमान स्थिति में पहुँच गए हैं।

पहले, किसी की बात पर यकीन कर लेना स्वाभाविक था - भोलापन नहीं। श्री रामचरितमानस में त्रेतायुग के शासकों की निष्ठा का बखान करते हुए कहा गया है कि अपनी बात पर कायम रहना उनकी परंपरा थी, चाहे उनकी जान ही क्यों न चली जाए। आज, किसी के द्वारा बोले गए शब्दों का कानूनी रूप से मूल्य तभी होता है जब वे किसी न किसी रूप में दर्ज और प्रमाणित किये गए हों।

दुनिया में आज भी कुछ ऐसे समुदाय हैं जिनकी भाषाओं की कोई लिखित लिपि

नहीं है, और उनका ज्ञान, संस्कृति और परंपराएँ कहानियों और गीतों के माध्यम से मौखिक रूप से आगे बढ़ती हैं। वे आज भी मौखिक समझौतों का सम्मान करते हैं, गवाहों को आमंत्रित करते हैं और अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए कुछ विशिष्ट अनुष्ठान करते हैं।

लेकिन तथाकथित उन्नत देशों में स्थिति इससे बिलकुल अलग है - वहां लिखित समझौतों में भी वो विश्वसनीयता नहीं होती जो पहले के समय में मौखिक शब्दों में होती थी। औपचारिक समझौते भी तब तक बेकार हैं जब तक कि उन्हें कानूनी रूप से सुरक्षित न किया गया हो।

जिस प्रकार कमज़ोर आँखों को ठीक से देखने के लिए चश्मे की और कमज़ोर घुटनों को लाठी के सहारे की ज़रूरत होती है, उसी प्रकार जब आत्माएँ सत्य की शक्ति खो देती हैं, तो सत्य को सहारा देने के लिए विस्तृत कानूनी व्यवस्थाएँ बनानी पड़ती हैं। आज हमारे जीवन के लगभग हर पहलू और मानवीय गतिविधियों के लगभग सभी क्षेत्रों पर अनेक नियम और कानून लागू हैं। इन कानूनों को लागू करने के लिए प्रत्येक देश में पुलिस, जाँच एजेंसियाँ, और न्यायपालिका सहित एक विशाल कानून व्यवस्था तंत्र मौजूद है। लेकिन जब आत्माएँ आध्यात्मिक नियमों का उल्लंघन करने लगती हैं, तो वे लौकिक नियमों का भी सम्मान नहीं करतीं। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हमारे देश की अदालतों में चार करोड़ से ज़्यादा मामले लंबित हैं।

कानून के क्षेत्र से हट कर, जहाँ

आधिकारिक तंत्र द्वारा न्याय प्रदान करने का प्रयास किया जाता है, सार्वजनिक चर्चाएं, जो नीतिगत निर्णयों और सामाजिक मानदंडों को आकार देती हैं, गलत सूचनाओं और भ्रामक सूचनाओं से दूषित हो गई हैं, जिससे सच अक्सर छुप जाता है । विभिन्न समूहों के लोग परस्पर विरोधी 'तथ्यों' को केवल इसलिए सत्य मान लेते हैं क्योंकि वे उनकी भावनाओं और पूर्वाग्रहों से मेल खाते हैं, भले ही ऐसे 'तथ्यों' के पीछे कोई प्रमाण और तर्क न हों। सोशल मीडिया ने झूठी और भ्रामक सूचनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करके इस प्रवृत्ति को और बढ़ा दिया है। सोशल मीडिया का उपयोग करने वाले वास्तविक समाचारों की तुलना में फर्जी खबरें ज़्यादा साझा करते हैं। गलत सूचनाओं का प्रसार जनता की धारणाओं और व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव डालता है, समाज का ध्रुवीकरण करता है और कलह को बढ़ावा देता है।

स्थायी शांति और सुख का सबसे सरल मार्ग कौन सा है ?

सोशल मीडिया का उपयोग करने वाले वास्तविक समाचारों की तुलना में फर्जी खबरें ज़्यादा साझा करते हैं। गलत सूचनाओं का प्रसार जनता की धारणाओं और व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव डालता है

ऐसा क्यों हो रहा है? जब व्यक्ति आध्यात्मिक सत्यों और मूल्यों से दूर होते हैं, तो किसी भी प्रकार के सत्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता कमज़ोर होने लगती है। यदि हमारी सोच भय, घृणा या अविश्वास से विकृत है, तो जो सन्देश हमारे दृष्टिकोण के अनुरूप हैं, वे किसी कटु सत्य की तुलना में हमें अधिक आकर्षक लगेंगे। बहुत से लोग अब सत्य को अनदेखा या अस्वीकार कर देते हैं यदि वह उनके दृष्टिकोण के विपरीत हो और उनके एजेंडे में बाधा डालता हो।

इस असत्य के युग से हम सत्य के युग में तभी लौट सकते हैं जब हम सत्य पर आधारित जीवन जीना शुरू करें। उसका पहला कदम है यह पहचानना कि हम सभी आत्माएँ हैं, परमात्मा की संतान हैं, और एक आध्यात्मिक परिवार का हिस्सा हैं। इस तथ्य को स्वीकार करने और इस पर चिंतन करने से आत्मा के सुप्त मूल गुण - शांति, प्रेम, पवित्रता और सत्यता - जागृत होने लगते हैं। जैसे-जैसे हम आत्मचेतना का अभ्यास करके और दूसरों को आत्मिक रूप में देखकर इन गुणों का अनुभव करते हैं, हमें एहसास होने लगता है कि जो भी हमें सच्ची संतुष्टि देता है, जैसे स्थायी शांति और शुद्ध प्रेम, वह सब अपने भीतर झाँककर पाया जा सकता है। अपने मूल गुणों के अनुसार जीने से भावनात्मक स्थिरता और खुशी मिलती है। और जब हम स्मरण के माध्यम से परमपिता परमेश्वर से जुड़ते हैं, जो इन गुणों के शाश्वत और अनंत स्रोत हैं, तो आत्मा स्वयं को शुद्ध, सशक्त और धन्य महसूस करती है। तब सत्य हमारा स्वाभाविक गुण बन जाता है, क्योंकि हमें यह अहसास हो जाता है कि सत्य का मार्ग ही स्थायी शांति और सुख का सबसे सरल मार्ग है।

सुख शांति समृद्धि

सुख शांति समृद्धि प्राप्त करने की कला सीखाती विद्यापीठ

संपादक : जीतु सोमपुरा +91 9324446487

सहायक संपादक : आकाश सोमपुरा

बृजमोहन भाई जी की बातें और अनुभव हमें जीवन में सच्चाई, संयम और शांति का एक पुल प्रदान करते है

९ अक्टूबर २०२५ का दिन हमारे लिए अविस्मरणीय क्षण लेकर आया, जब ब्रह्मा कुमार बृजमोहन भाई जी ने इस धरती से प्रस्थान किया।ङ्कउनके चलने से एक युग का अंत हुआ, पर उनका व्यक्तित्व , उनके अनुभव, उनकी शिक्षाएं, और उनका स्नेह, आज भी हमारे दिलों में जीवित है। बृजमोहन भाई जी न केवल एक आध्यात्मिक गुरु थे, बल्कि एक ऐसे सज्जन थे जिनका हँसमुख और रमणीक स्वभाव सबको आकर्षित करता था।

बृजमोहन भाई जी एक ऐसे व्यक्तित्व के आदर्श थे जिन्होंने जीवन को सेवा के नाम किया। उनका मार्गदर्शन आध्यात्मिकता की गहराई से भरा था और उनका दृष्टिकोण मानवता की असली भलाई को केन्द्र में रखता था। वे सदैव सरल, विनम्र और संस्कारों से परिपूर्ण थे। उनकी बातें, उनके अनुभव हमें जीवन में सच्चाई, संयम और शांति का एक पुल प्रदान करते है।

विशाल हृदय, धर्म के दीपक, उनके चरणों में अद्भुत प्रकाश था। बृजमोहन भाई जी का जीवन सदैव सत्य, सेवा, और समर्पण का जीता जागता उदाहरण रहा। उन्होंने जीवन के हर पहलू में संयम और आध्यात्मिकता का संदेश दिया। उनकी सादगी, धैर्य, और अटूट विश्वास ने कई लोगों के दिलों को प्रेरणा दी। जो ज्ञान उन्होंने बाँटा, वह जीवन का अमूल्य धन था। उनके अनुभव और शिक्षाएं सदैव मार्गदर्शक बनी रहेंगी।

उनके द्धारा फैलाए गए प्रेम और त्याग के बीज आज भी हमारे बीच फलित हो रहे हैं। उनका जाना एक युग की समाप्ति नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत है, जहां उनकी शिक्षाओं का वह प्रकाश हमारे मार्ग को सदैव प्रकाशित करेगा।

उनका भाषण सुनना जीवन में एक सुखद अनुभव था क्योंकि वे हमेशा हँसी-मज़ाक और सहज हास्य से सबका मनोबल बढ़ाते। उनका अंदाज़ ऐसा था कि कठिन विषय भी बेहद सरल और आनंदित होकर समझ आते। यही उनकी सबसे बड़ी खूबी थी कि वे हँसी के माध्यम से जीवन के संदेश देते और हर मनुष्य का मनोबल बढ़ाते।

उनकी शिक्षाएं दिल को छू जाने वाली थीं, पर उसमें गंभीरता के साथ ही हल्के-फुल्के हंसी के रंग भी होते थे। यही कारण था कि उनके श्रोता सिर्फ सूचनाएँ नहीं लेते, बल्कि प्रेरित और मुस्कुराते हुए अपने जीवन में बड़े बदलाव लाते। वे दिखाते थे कि आध्यात्मिकता में भी खुशी और आनंद का कितना बड़ा महत्व है।

दिल के कोने में बसे हैं आप हमेशा,
बृजमोहन भाई,
रहे स्नेह की छाँव जैसे।
आपकी सीखें बनीं जीवन का गीत,
जहाँ भी हों हम, आपके अक्षर साथ हैं।
धूप में भी आप जैसे छाँव मिले,
संघर्ष के पथ पर उम्मीद के दीप जलें।
जग में आपका नाम अनमोल है भूले न,
आपके संस्कारों की खुशबू सदाबहार रहे।
मेरा व्यक्तिगत अनुभव
जब मैंने जेट एयरवेज एवं स्पाइसजेट

की इन-फ्लाइट मैगजीन के लिए लिखा हुआ आर्टिकल उन्हें दिया, तो उन्होंने बड़ी खुशी से कहा- ङ्कपरमात्मा ने यह सेवा आपके द्धारा करवाई है, मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। मैं इसे अपने ओ.आर. सी के लाइब्रेरी में सुरक्षित रखूंगा। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

उन शब्दों में उनकी सादगी, अपनापन और प्रेम झलकता था, जो मेरे लिए जीवनभर की प्रेरणा है।

बीके चंदा
(मुख्यालय संयोजक मीडिया विंग, प्रेरक वक्ता, उत्कृष्ट मंच संचालक, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका (शांतिवन)

दिल के कोने में बसे हैं आप हमेशा,
बृजमोहन भाई, रहे स्नेह की छाँव जैसे।
आपकी सीखें बनीं जीवन का गीत,
जहाँ भी हों हम, आपके अक्षर साथ हैं।
धूप में भी आप जैसे छाँव मिले,
संघर्ष के पथ पर उम्मीद के दीप जलें।
जग में आपका नाम अनमोल है भूले न,
आपके संस्कारों की खुशबू सदाबहार रहे।

उनकी सहजता, जो हर परिस्थिति को प्रसन्नता और प्रकाश में बदल देती थी

जीवन वह नहीं जो बस बीत जाए, जीवन वह है जो दूसरों के हृदयों में अमर छाप छोड़ जाए। ऐसे ही एक अद्भुत जीवन के धनी थे - आदरणीय बृजमोहन भाईजी, जो अपने रामनीक स्वभाव, गंभीर चिंतनशीलता, और ईज़ी नेचर के लिए सभी के हृदयों में बस गए। ९० वर्ष से अधिक की आयु में भी वे सदैव सेवा में तत्पर, ज्ञान में रमे हुए, और बाबा की याद में स्थिर दिखाई देते थे। स्वास्थ्य कभी-कभी साथ न देता, परन्तु आत्मबल और ईश्वर के प्रेम से ओतप्रोत यह आत्मा निरंतर ज्ञान के चिंतन और मंथन में लगी रहती थी। कई बार देखा गया कि जब शरीर विश्राम मांगता था, तब भी वे सहज मुस्कान के साथ सेवा पर हाज़िर रहते। उनकी आँखों में बाबा के कार्य की चमक, और वाणी में मधुरता का अमृत झलकता था। जब भी किसी विशिष्ट व्यक्ति को मिलाने ले जाया जाता, तो वे बड़ी ही सहजता और धैर्य से समय देते। उनकी ज्ञान-युक्त बातचीत, हल्की-फुल्की हँसी, और दिल छू लेनेवाली सरलता से हर व्यक्ति संतुष्ट और प्रभावित

होकर लौटता। वे केवल व्यक्ति से मिलते नहीं थे, वे हरेक के दिल पर प्रभु प्रेम की छवि अंकित कर देते थे। एक बार एक सदगुरु को उनसे मिलाने ले जाया गया, तो उन्होंने पहले विनम्रता से जाना कि गुरुजी की सोच क्या हैं? वे किस भाव से आ रहे हैं? अतः उन्होंने पहले उनकी भावना को समझा, फिर उसी अनुसार ज्ञान का आदान-प्रदान किया। यही उनकी युक्ति और बुद्धिमत्ता थी-कि वे पहले व्यक्ति के मन के भावों को समझते, फिर ज्ञान का आदान-प्रदान करते।

बृजमोहन भाई का जीवन हमें सिखाता है कि गंभीरता और सरलता, चिंतन और प्रसन्नता, तथा सेवा और विनम्रता-सब एक साथ सुंदर तालमेल में चल सकते हैं, केवल मन में बाबा का प्रेम और सेवा का भाव सदा जीवित रहे।

यह क्षमता उन्हें एक सच्चा सेतु बनाती थी-जो हृदयों को जोड़ता और समझ के माध्यम से ही सेवा करता था। उन्हें मुंबई, बोरीवली स्थित प्रभुउपवन सेवा स्थान विशेष रूप से प्रिय था। उन्होंने दो टेलीफिल्मों की शूटिंग के लिए भी इस सेवाकेंद्र का चयन किया। इस से यह स्पष्ट झलकता है कि वे जिस भी स्थान या व्यक्ति में कोई विशेषता देखते, उसे ईश्वरीय सेवा में लगा देते। उनकी बुद्धि सदैव स्पष्ट, पारखी और रचनात्मक रहती-जो हर विशेषता को पहचानकर उसे सेवा में रूपांतरित कर देती थी। उनका विनोदप्रिय स्वभाव भी अद्धितीय था। एक बार जब वसई से बोरीवली ट्रेन में साथ यात्रा करने का अवसर मिला, तो उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा- मुझे ट्रेन से उतरने की जरूरत ही नहीं पड़ी, लोग इतना सहयोग देते हैं कि खुद-ब-खुद उतर जाता हूँ! ऐसी थी उनकी सहजता, जो हर परिस्थिति को प्रसन्नता और प्रकाश में बदल देती थी। बृजमोहन भाई जी वास्तव में ज्ञान, नम्रता, परख और हास्य का संगम थे। उनका जीवन हमें सिखाता है कि गंभीरता और सरलता, चिंतन और प्रसन्नता, तथा सेवा और विनम्रता-सब एक साथ सुंदर तालमेल में चल सकते हैं, केवल मन में बाबा का प्रेम और सेवा का भाव सदा जीवित रहे।आज जब वे अपनी दिव्य यात्रा पर आगे बढ़े हैं, तो उनके शब्द, उनकी मुस्कान और उनके vibrations हमारे दिलों में सदा जीवित रहेंगे। हम सभी सहृदय श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए यही शुभ कामना करते हैं कि बाबा के सच्चे सेनानी सदा स्वास्थ्य, सुख, स्नेह और समृद्धि से संपन्न हों।

बीके दिव्या बहन
(निर्देशिका, उत्तर मुंबई ब्रह्माकुमारिस् सेवा केंद्र तथा ट्रांसपोर्ट ट्रावेल विंग की अध्यक्षा)

सुविचार

- खुश रहना है तो चीज़ों से नहीं, खुद से जुड़ो।
- प्रेम, शांति और क्षमा- सबसे शक्तिशाली दवाइयाँ हैं।
- कर्म हमारी असली बैलेंस शीट हैं, भाग्य बस उसका रिज़ल्ट है।
- परिस्थितियाँ सिर्फ सीन हैं, असली स्क्रिप्ट तो हमारे कर्म लिखते हैं।
- खुशी की डिलीवरी कोई और नहीं करता, उसका एड्रेस हमेशा भीतर है।
- अगर खुद से बातचीत मीठी हो जाए, तो दुनिया की कड़वाहट असर नहीं करती।
- हमारा दिन हमारे रिएक्शन से बनता है, परिस्थितियों से नहीं।
- किसी का दुःख बांटने का सबसे सुंदर तरीका है... स्वयं स्थिर रहना।
- जब परिस्थिति नहीं बदल सकते, तब अपनी सोच बदलें और वही हमारी शक्ति है।
- दूसरों से नहीं, अपने नजरिए से जिंदगी खूबसूरत बनती है।

बृजमोहन भाई का तपस्वी जीवन और शिक्षाएं हमारे लिए मार्गदर्शक और प्रेरणा स्त्रोत बनी रहेंगी

आदरणीय बृजमोहन भाई जी यज्ञ के आधार स्तम्भ और नीति निर्धारक चार प्रमुख भाईयों में से एक थे। वह कदम-कदम पर हम बहनों का मार्गदर्शन करते थे। उनका तपस्वी जीवन और उनकी शिक्षाएं आगे भी हमारे लिए मार्गदर्शक और प्रेरणा स्त्रोत बनी रहेंगी। उनके एडवांस पार्टी में चले जाने से जो स्थान रिक्त हुआ है, उसे भर पाना संभव नहीं होगा। निश्चित ही बाबा ने उन्हें किसी विशेष सेवा के लिए अपने पास बुलाया होगा, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है।

आदरणीय बृजमोहन भाई जी ने जो यज्ञ की अथक सेवा की है,

वह रह-रहकर याद आती रहेगी। बाबा ने उनके व्यक्तित्व को बहुत सारी विशेषताओं से नवाजा था। विशेषकर जिस तरह से दिल्ली में शासन के प्रमुख और नामचीन हस्तियों की सेवा करके यज्ञ की सेवाओं को आगे बढ़ाने और उसे सुचारू रूप से चलाने में निमित्त बने, उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम होगी। ऐसी विशिष्ट आत्मा की स्मृतियों को भुला पाना आसान नहीं होगा। ऐसी अनमोल आत्मा की शान्ति के लिए हम छोटी बहनों की स्नेह भरी दुआएं हैं।

बी.के. हेमलता बहन
(इन्दौर जोन)

अपने जीवन में त्याग, तपस्या और सेवा का एक उदाहरण बनाया

हमारे अति आदरणीय बृजमोहन भाईसाहब को हैदराबाद शांति सरोवर की ओर से तथा पूरे आंध्रा तेलंगाना की ओर से हम दिल से शुभ श्रद्धांजलि व् पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।

बृजमोहन भाईजी ने अनेक बी. के. और नॉन-बी. के. आत्माओं की सेवा और पालना में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भाई साहब के अंदर बहुत रमणीकता थी । उनके क्लास में कोई सो नहीं सकता था। जब वो मुरली सुनाते थे और क्लास कराते थे तो हमें समय का पता ही नहीं चलता था। हम अपनी सुधबुध खो जाते थे। साथ ही भाई साहब में सुन्दर

वो सर्वगुण संपन्न १६ कला सम्पूर्ण आत्मा बन करके गए है

गीत गाने की कला थी। उन्होंने दादीजी को भी बहुत गीतों के साथ बहलाते- बहलाते अंत तक सेवा की और मेरे साथ भी भाई साहब ने बहुत बार गीत गाए। ऐसे भाई साहब को तो सतयुग में बहुत श्रेष्ठ पद प्राप्त होगा। वो अच्छे लेखक भी थे और भाई साहब अपने लौकिक जीवन में भी बहुत अच्छी पोस्ट पर थे। उन्होंने बाबा की श्रीमत अनुसार अपने जीवन में त्याग, तपस्या और सेवा का एक उदाहरण बनाया । हमारे यज्ञ के चार पिलर्स भाईयों में से आप एक स्ट्रांग पिलर थे, आपने अपनी अंतिम श्वांस तक सेवा की है। भाई साहब की प्लानिंग करने का तरीका, डिसिप्लिन और उनका मीटिंग कंडक्ट करने का तरीका हो, हर बात में वे ऑलराउंडर थे। अगर उनकी विशेषता का वर्णन करे तो अवर्णनीय है और भाई साहब इतने अच्छे लेख लिखते थे, जो सबके जीवन में उमंग उत्साह बढ़ा देते थे। हम कहेंगे वो सर्वगुण संपन्न १६ कला सम्पूर्ण आत्मा बन करके गए है।

बीके कुलदीप दीदी
(हैदराबाद शांति सरोवर तथा आंध्रा तेलंगाना की ओर से शुभ श्रद्धांजलि)

सुख शांति समृद्धि

सुख शांति समृद्धि प्राप्त करने की कला सीखाती विद्यापीठ

संपादक : जीतु सोमपुरा +91 9324446487

सहायक संपादक : आकाश सोमपुरा

अनमोल मणि भ्राता बृजमोहन जी की सोच केवल कार्य नहीं, बल्कि एक संदेश थी - कि संसार में श्रेष्ठता वही है जो संयम और स्नेह से युक्त हो

एक अनमोल मणि भ्राता ब्रजमोहन जी का जीवन विनम्रता, प्रेम और श्रद्धा का अद्भुत संगम था। भ्राता जी ने जीवन को बहुत निकट से देखा, समझा और अनुभव किया। चुनौतियों को उन्होंने सहजता से स्वीकारा और प्रत्येक परिस्थिति में विजय का वरण किया। जब भी किसी कार्य को संस्था असंभव मानती थी, आदरणीय दादी प्रकाशमणि जी (तत्कालीन मुख्य प्रशासिका) उन्हें याद करतीं-और भ्राता जी अपनी सूझबूझ, निपुणता और ईश्वरीय शक्ति से उस असंभव को संभव बना देते।

उनकी सबसे बड़ी पहचान थी- विनम्रता। अपनी विद्धता का उन्होंने कभी प्रदर्शन नहीं किया, बल्कि गहन आध्यात्मिक सिद्धांतों को सरल सूत्रों में बाँटते थे। माउंट आबू में महामंडलेश्वर सम्मेलन में जब उन्हें विचार व्यक्त करने हेतु आमंत्रित किया गया, तो उन्होंने पूर्ण नम्रता से संतों का सम्मान करते हुए अपने विचार रखे, और संतों ने उनके भाव को श्रद्धा से स्वीकार किया।

उनकी रूहानियत उनके मुस्कराते, तेजस्वी चेहरे से झलकती थी। वे हर किसी से प्रेम और सम्मान से मिलते थे। उनके प्रति प्रत्येक ब्राह्मण आत्मा के मन में श्रद्धा और स्नेह का सागर उमड़ता था। अनुशासन को उन्होंने प्रेम-सूत्र में पिरोकर स्वयं भी पालन किया और सबको भी प्रेरित किया।

संस्था की प्रगति के इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

उन्होंने इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की छवि को अपने वक्तव्यों और लेखनी से वैश्विक मंचों तक पहुँचाया। Purity पत्रिका का संपादन वर्षों तक किया, जिसने विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाई।

उनका योगी-जीवन अतुलनीय था। अमृतवेले का योग उनका सबसे प्रिय समय था। वे प्रतिदिन प्रातः ३:२० बजे डायमंड हॉल में पहुँच जाते थे। मैं स्वयं उनसे पहले पहुँचने का प्रयास करती, परंतु चाहे एक मिनट का ही अंतर क्यों न हो - वे पहले ही वहाँ उपस्थित रहते। यह उनकी साधना की निरंतरता और संकल्प-शक्ति का प्रमाण था।

उनका हर विचार नवीनता से परिपूर्ण होता था। उनकी सोच केवल कार्य नहीं, बल्कि एक संदेश थी-कि संसार में श्रेष्ठता वही है जो संयम और स्नेह से युक्त हो। आप Political Wing के अध्यक्ष रहे और आपने प्रत्येक दल के नेताओं की सेवा की- राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष या राष्ट्रीय अध्यक्ष-सभी को आध्यात्मिकता से जोड़ने का अद्भुत प्रयास किया।

आप Political Wing के अध्यक्ष रहे और आपने प्रत्येक दल के नेताओं की सेवा की- राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष या राष्ट्रीय अध्यक्ष-सभी को आध्यात्मिकता से जोड़ने का अद्भुत प्रयास किया।

ज्ञान सरोवर और ORC की आर्ट गैलरी आपकी कलात्मक दृष्टि की मिसाल हैं।

आपका विश्वास था-संघे शक्ति कलियुगे, और उसी भाव से आपने नेतृत्व को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक दिशा दी।

भ्राता जी केवल वक्ता ही नहीं, बल्कि संगीतकार, कलाकार और चिंतक भी थे। ज्ञान सरोवर और जठ्ठ की आर्ट गैलरी आपकी कलात्मक दृष्टि की मिसाल हैं।

आपका गीता पर गहन अध्ययन और चिंतन अद्भुत था। आपने गीता के भगवान में योगीराज श्रीकृष्ण के विराट रूप में निहित निराकार परमात्मा को पहचाना और समाज के समक्ष प्रस्तुत किया।

आप महासचिव, फाइनेंस हेड और यज्ञ मैनेजमेंट कमेटी के सदस्य के रूप में सेवा, संयम और सृजनशीलता के प्रतीक बने।

आपकी स्मृति, आपकी शिक्षा, आपकी साधना हर ब्राह्मण आत्मा के लिए सदा प्रेरणा-स्रोत बनी रहेगी।

आपका जीवन स्वयं एक जीवंत गीता था, जो हमें सिखाता है-

सेवा ही साधना है, और साधना ही सफलता।

बी.के. मनोरमा बहन
(अध्यक्षा, धार्मिक प्रभाग एवं प्रभारी ब्रह्माकुमारीज प्रयागराज सबजोन)

साधनों और धन को सफल करने के साथ-साथ भाईसाहब समय को सफल करने पर भी ध्यान देते थे : बी.के. आनंद भाई

मैं नेपाल से पहले मधुबन में सेवा पर गया था। वहां कुछ समय सेवा करने के बाद वर्ष १९९९ में मुझे दिल्ली में बृजमोहन भाईसाहब के पास सेवा पर भेजा गया। भाईसाहब उस समय करोल बाग में पांडव भवन सेवाकेंद्र पर रहते थे। गुलज़ार दादी उस समय सेंटर इंचार्ज थीं। आशा दीदी भी वहीं रहती थीं। मैं जब दिल्ली पांडव भवन पहुंचा, तो सबसे पहले तो भाईसाहब ने मुझे नया नाम दिया। मेरा नाम रघुनाथ है, परन्तु भाईसाहब ने कहा कि यहाँ तो पहले से एक रघु भाई है, इसलिए आपको आनंद नाम देते हैं। मैंने यह आनंद से स्वीकार किया।

मैं जब भाईसाहब के पास सेवा पर आया तो मुझे कुछ भी नहीं आता था - मैं तो नेपाल में अपने गांव से आया था। परन्तु भाईसाहब ने मुझे सब कुछ बड़े प्यार से सिखाया - भोजन बनाना, बड़ों से कैसे व्यवहार करना है, सेंटर में सब कुछ कैसे व्यवस्थित रखना है, कोई वी.आई.पी. आये तो उनकी सेवा कैसे करनी है, यह सब भाईसाहब ने सिखाया।

भाईसाहब से मुझे शुरू से ही एक पिता की भासना आती थी - वे आयु में भी बड़े थे और एक पिता की तरह ही मुझे पालना और शिक्षा देते थे। उनकी धारणाओं से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। भाईसाहब के जीवन में सिर्फ दो चीजें थीं - बाबा और यज्ञ। वे दिनचर्या में बिलकुल पक्के और नियम मर्यादाओं पर चलने वाले थे। यज्ञ के इतने बड़े भाई होते हुए भी उनके जीवन में बहुत सादगी थी।

मैंने देखा वे ज़रुरत से ज्यादा कोई भी चीज़ अपने पास नहीं रखते थे। कोई भी एक्सट्रा चीज आती थी तो मुझे कहते थे कि यज्ञ में दे दो। उनका ध्यान रहता था की कोई भी चीज़ व्यर्थ न जाए। अगर किसी फल का एक हिस्सा खराब हो जाता था तो भाईसाहब वह हिस्सा काट कर बाकी फल खुद खाते थे। मैं उनसे पूछता था कि आप ऐसा फल क्यों खाते हैं, हम आप को दूसरा दे देंगे, तो वे कहते थे कि यह बात तुम नहीं समझोगे। ऑफिस में प्रिंटर पर कुछ भी प्रिंट करते थे तो उनका कहना होता था कि कागज़ के दोनों तरफ प्रिंट निकालो। एक तरफ प्रिंट किये हुए कागज़ वे अपने पास रखते थे और उनके खाली हिस्से में लिखा करते थे।

धन की इकोनॉमी पर उनका बहुत ध्यान रहता था और वे कोशिश करते थे कि यज्ञ का कार्य कम खर्च में हो जाए। उनसे मिलने भाई-बहनें आते थे तो वे श्रद्धा से कुछ धन सेवा के लिए दे जाते थे। कइयों की भावना होती थी कि धन यज्ञ के लिए अनाज खरीदने में लगे, या किसी विशेष कार्यक्रम में लगे। भाईसाहब सुनिश्चित करते थे कि धन जिस सेवा अर्थ दिया गया है, उसी में लगे और एक रुपया भी कहीं और खर्च न हो। परन्तु इसके साथ-साथ भाईसाहब जहां आवश्यक हो वहां सभी को अपने साथ लेकर, भाई-बहनों में हिम्मत और उमंग उत्साह भर कर बड़ी दिल से सेवा करते और कराते भी थे। इसी के फल-स्वरुप भाईसाहब दिल्ली में अनेक भव्य कार्यक्रम करवाने के निमित्त बने।

साधनों और धन को सफल करने के साथ-साथ भाईसाहब समय को सफल करने पर भी ध्यान देते थे। सेवा अर्थ लोगों से मिलना, फोन पर बात करना, मीटिंग करना, और उसके अलावा जब भी समय मिलता था तो वे अव्यक्त मुरलियाँ, भगवद्गीता आदि पढ़ कर उनसे पॉइंट्स नोट करते थे। मैंने देखा कि हम अगर गाडी से या ट्रेन से कहीं जा रहे होते थे तो भाईसाहब का पढ़ना-लिखना चलता रहता था। मैं अपने साथ हमेशा अव्यक्त मुरली, गीता की किताब, और एक पैड लेकर चलता था क्योंकि भाईसाहब की बुद्धि में जब भी कोई नई पॉइंट आती थी तो वे लिखने के लिए पैड मांगते थे। एक बार भाईसाहब के साथ मुझे कहीं फ्लाइट से जाना था। प्लेन में बैठने के बाद भाईसाहब ने मुझसे पैड मांगा। तब मुझे याद आया कि पैड तो मैंने अन्य सामान के साथ चेक-इन कर दिया। यह बात मैंने भाईसाहब को बताई, तो उन्होंने फिर एयर होस्टेस से पेपर नैपकिन मांग कर उस पर अपना लिखने का काम किया। वे नहीं चाहते थे कि फ्लाइट का समय व्यर्थ जाए, और उस समय को भी वे सफल करते थे। ९० वर्ष की आयु में गीता ज्ञान को स्पष्ट करने के लिए भाईसाहब ने एक हज़ार से अधिक एपिसोड लिखे और स्टूडियो में उनकी रिकॉर्डिंग भी की।

भाईसाहब के रमणीक स्वभाव से सब परिचित थे। वे खुद भी हलके रहते थे और अगर कोई ऐसी बात हो जाती तो मुझे भी हल्का कर देते थे। मैं जब उनके पास सेवा में आया तो मैं छोटा था। कभी मेरे से कोई चीज़ टूट जाती थी तो भाईसाहब कभी गुस्सा नहीं करते थे। वे कहते थे जो हो गया सो हो गया, अब आगे बढ़ो।

ओ.आर.सी. बनने के कुछ वर्ष बाद भाईसाहब वहां रहने लगे। बड़े स्थान पर, बड़े परिवार में अनेक तरह की बातें आती हैं। हर प्रकार की आत्माओं को साथ लेकर चलना और हर समस्या का युक्ति से, ज्ञान और योग बल से समाधान निकालना, यह मैंने भाईसाहब में देखा।

अभी अक्टूबर का महीना चल रहा है। हर वर्ष ३० अक्टूबर को दिल्ली में हम भाईसाहब का जन्मदिन मनाते थे। भाईसाहब की जन्मदिन मनाने में रूचि नहीं थी, और उनकी इच्छा रहती थी कि मनाना भी है तो सरल रीति से मनाया जाए। पर क्योंकि वे दिल्ली के सबसे वरिष्ठ भाई थे, भाई-बहनें बड़ी ख़ुशी से उनका जन्मदिन मनाते थे। उस अवसर पर भी भाईसाहब सबको ज्ञान की बातें ही सुनाते थे।

भाईसाहब ड्रामा में एक उत्कृष्ट और अनोखा पार्ट बजा कर अव्यक्त सेवाओं के लिए चले गए। भाईसाहब के साथ सेवा करने का जो भाग्य मुझे मिला, उससे न केवल बहुत कुछ सीखा, पर उससे दादियों और वरिष्ठ भाई-बहनों के भी समीप आने का, उनकी सेवा करने का और उनकी दुआएं पाने का भी अवसर प्राप्त हुआ। ङ्कअपने अंतिम दिनों में भाईसाहब का मनसा सेवा पर बहुत अटेंशन था। भाईसाहब ने एक बार कहा कि हमें सभी को शुभ भावना और शुभकामना देनी है। भले उनको ज़रुरत नहीं है फिर भी हमें देनी हैं क्योंकि हम ड्राइविंग सीट पर बैठे हैं। ङ्कमैं अपने आप को धन्य समझता हूँ कि बाबा ने मुझे ऐसी सेवा दी और मेरा जीवन कहाँ से कहाँ पहुंचाया।

बीके आनंद भाई
(छोटे सेवक की बड़ी बातें)

हर वर्ष ३० अक्टूबर को दिल्ली में हम बृजमोहन भाईसाहब का जन्मदिन मनाते थे। भाईसाहब की जन्मदिन मनाने में रूचि नहीं थी, और उनकी इच्छा रहती थी कि मनाना भी है तो सरल रीति से मनाया जाए। क्योंकि वे दिल्ली के सबसे वरिष्ठ भाई थे, भाई-बहनें बड़ी ख़ुशी से उनका जन्मदिन मनाते थे। उस अवसर पर भी भाईसाहब सबको ज्ञान की बातें ही सुनाते थे।

सुख शांति समृद्धि पत्रिका यानी जीवन जीने की कला सिखाती विश्व विद्यापीठ के सहयोगी

बीके अशोक उपाध्याय

माताजी बीके शरवती उपाध्याय

(पांडव भवन, माउंट आबू)

सुख शांति समृद्धि

सुख शांति समृद्धि प्राप्त करने की कला सीखाती विद्यापीठ

संपादक : जीतु सोमपुरा +91 9324446487

सहायक संपादक : आकाश सोमपुरा

भ्राता बृजमोहन जी ने उन दिनों पवित्रता को धारण किया वो अपने आप में एक बहुत बड़ी बात थी : बी.के.सूरज भाई जी

ॐ शांति।

इस सृष्टि पर महान आत्माओं का आगमन स्वयं में एक बहुत ही श्रेष्ठ लक्षण होता है। विश्व कल्याण के लिए यदि इस धरती पर कुछ पुण्यात्माएँ, कुछ महानात्माएँ और धर्मात्माएँ न हों, तो यह धरा भी जैसे नष्ट-सी हो जाती है। तब पाप का प्रकोप बढ़ जाता है, धर्म की शक्ति क्षीण हो जाती है।ङ्कऐसे ही समय में, बहुत वर्ष पहले हमारे ब्रह्माकुमार ब्रजमोहन भाईजी ज्ञान में आए। आपके पिता जी भी ज्ञान में थे। आप उस समय छात्र थे और आगे चलकर चार्टर्ड अकाउंटेंट बने। बहुत ऊँचे पद पर पहुँचने के बावजूद, आपका सहयोग यज्ञ के लिए अत्यंत उत्तम रहा, क्योंकि उस समय यज्ञ आर्थिक संकट से गुजर रहा था। आपके पिता जी भी बड़े पद पर थे, और जब आप सी.ए. बने तो आपने यज्ञ को उभारने के लिए आर्थिक सहयोग भी अत्यधिक दिया। इसलिए हम आपको न केवल स्नेह और सम्मान सहित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, बल्कि आपकी सेवाओं को कृतज्ञता सहित स्मरण करते हुए धन्यवाद भी प्रकट करते हैं।ङ्कआप वास्तव में इस धरती पर एक चमकते हुए सितारे थे। उन दिनों में पवित्रता को धारण कर लेना अपने आप में एक बहुत बड़ी बात थी। ऐसी पवित्र आत्माएँ संसार के लिए अत्यंत कल्याणकारी होती हैं। अपने युवाकाल में आपने पवित्रता से स्वयं को सँवारा और सेवाओं में लग गए। अनेक लोगों का कल्याण किया, अनेक आत्माओं को परमपिता परमात्मा से मिलाया। उस समय आप पंजाब के नयांगल में पोस्टेड थे और वहाँ आपने महासेंटर की स्थापना की।

जब १९७३ में दिल्ली में पांडव भवन का निर्माण हुआ, तब दादियों ने आपको नौकरी से मुक्त कर पांडव भवन की सेवाओं के निमित्त नियुक्त किया। तब से आपने बहुत बड़ी-बड़ी सेवाएँ सँभालीं।

आपने प्योरिटी अख़बार का संपादन भी किया - जो उस समय मासिक निकलता था - परंतु अत्यंत सुंदर और गहन होता था। आप एक बहुत अच्छे लेखक और पत्रकार भी थे।

आपने B.Com, LL.B. और C.A. की पढ़ाई की थी। विद्वान शिक्षित आत्मा होने के साथ-साथ आपकी अंग्रेज़ी और हिंदी दोनों भाषाओं पर बहुत सुंदर पकड़ थी।

मैंने जैसा उन्हें देखा, मेरा उनसे संपर्क १९६६ से रहा। उस समय मैं ज्ञान में नया था और मेरे मन में अनेक प्रश्न उठते थे। उन्होंने जो पुस्तक लिखी थी, उसमें उनका पता दिया हुआ था। मैंने लगभग ४० प्रश्न तैयार कर उन्हें भेज दिए, उत्तर पाने की इच्छा से।

एक बार हरिद्वार में जब हमारा मेला लगा था, वहाँ एक बड़े विद्वान महामंडलेश्वर ब्रह्माकुमारियों के बारे में उल्टा-सुल्टा बोल रहे थे। उनका पंडाल हमारे पंडाल के सामने था।तब ब्रजमोहन भाईजी ने अपने लाउडस्पीकर को उधर कर दिया और बहुत ही प्यार, संयम और तर्क सहित उनके हर प्रश्न का उत्तर दिया।उनके शब्दों में मर्यादा, विचारों में गहराई और उत्तरों में दिव्यता थी।

उन्होंने मुझे बहुत शीघ्र उत्तर लिखा कि - थोड़ा और ज्ञान लो, इन सभी प्रश्नों के उत्तर तुम्हें सहज ही प्राप्त हो जाएंगे।

उनकी यह बात मेरे लिए बहुत प्रेरणादायक रही। उन्होंने मुझे बहुत उत्साहित किया और मैं आगे बढ़ता गया।

बाद में जब मैं भी पांडव भवन आया, तो वे भी अक्सर वहाँ रहते थे। हमारा माउंट आबू के म्यूज़ियम की सेवाओं में साथ जाता था। हम शाम को पैदल ही वहाँ पहुँचते थे, हँसी-खुशी और आनंद में मार्ग तय करते हुए। उन दिनों साधन-सुविधाएँ बहुत नहीं थीं, फिर भी उनमें एक विशेष आकर्षण था - वे अत्यंत रमणीक व्यक्तित्व के धनी थे।

ज्ञान का तो वे भंडार ही थे। मैं यह कहने में संकोच नहीं करूँगा कि चाहे वह शास्त्रों का ज्ञान हो या संन्यासियों को देने वाला तर्कयुक्त ज्ञान, वे उसमें अत्यंत निपुण थे।

एक बार हरिद्वार में जब हमारा मेला लगा था, वहाँ एक बड़े विद्वान महामंडलेश्वर ब्रह्माकुमारियों के बारे में उल्टा-सुल्टा बोल रहे थे। उनका पंडाल हमारे पंडाल के सामने था।

तब ब्रजमोहन भाईजी ने अपने लाउडस्पीकर को उधर कर दिया और बहुत ही प्यार, संयम और तर्क सहित उनके हर प्रश्न का उत्तर दिया।

उनके शब्दों में मर्यादा, विचारों में गहराई और उत्तरों में दिव्यता थी।

ऐसी विद्धता, नम्रता और गहन ज्ञान के साथ ब्रजमोहन भाईजी ने यज्ञ में परमात्मा के अस्तित्व को सिद्ध करने का बीड़ा उठाया - और जीवनभर उसी कार्य में जुटे रहे।

राजयोगी सूरज भाई
(प्रेरक वक्ता और वरिष्ठ राजयोग शिक्षक)

बृजमोहन भाई जी, परमपिता परमात्मा की शिक्षाओं के साकार रूप थे : डॉ. प्रताप मिढ़ा

बृजमोहन भाई जी, जैसा कि मैं उन्हें जानता हूँ, परमपिता परमात्मा की शिक्षाओं के साकार रूप थे। उनके जीवन में संरक्षण और करुणा की सुगंध थी। उन्होंने सूक्ष्म आध्यात्मिकता से शिक्षा दी और पोषित किया। वे साहस और आत्मविश्वास से भरपूर थे! उन्हें स्मरण-ध्यान का शौक था और उनकी कक्षाएँ गहन अर्थपूर्ण और हास्य से भरपूर होती थीं।

वे जो कहते थे, उसी पर चलते थे! मैं आभारी हूँ कि मुझे उन्हें इतने करीब से देखने का सम्मान और सौभाग्य प्राप्त हुआ!

वे गीता के अध्ययन के महान प्रतिपादक थे और प्रतिदिन उसका अभ्यास करते थे

वे गीता के अध्ययन के महान प्रतिपादक थे और प्रतिदिन उसका अभ्यास करते थे।

डॉ. प्रताप मिढ़ा
(ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव तथा ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू के निदेशक)

बृजमोहन भाई जी आध्यात्मिक जगत में चमकते हुए सूर्य के समान थे

आदरणीय राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई जी आध्यात्मिक जगत में चमकते हुए सूर्य के समान थे। प्राण प्यारे अव्यक्त बापदादा तथा साकार मात-पिता, सर्व दादियों तथा ब्राह्मण परिवार के अति स्नेही, यज्ञ के आधार स्तम्भ, ब्रह्माकुमारीज़ के सेक्रेट्री जनरल मैनेजमेन्ट कमेटी के कर्णधार, एकाउन्ट डिपार्टमेन्ट के प्रमुख ९२ वर्षीय आदरणीय राजयोगी बृजमोहन भाई जी का स्वास्थ्य इस वर्ष जनवरी महीने से ठीक नहीं था। पहले काफी समय तक अहमदाबाद तथा ग्लोबल हास्पिटल, माउण्ट आबू में आपका इलाज चलता रहा, उसके पश्चात् आप दिल्ली ओआरसी में स्वास्थ्य लाभ ले रहे थे। आप ९ अक्टूबर, २०२५, सतगुरुवार के दिन सवेरे १० बजकर २५ मिनट पर अपनी भौतिक देह का त्याग कर बापदादा की गोद में समा गये।

जन्म और शिक्षा

सात जनवरी, १९३४ को पंजाब के अमृतसर में जन्मे राजयोगी बृजमोहन भाई ने दिल्ली विश्वविद्यालय से वर्ष १९५३ में वाणिज्य (ऑनर्स) में स्नातक किया। यहीं से वर्ष १९५५ में कानून (एलएलबी) की डिग्री प्राप्त की। वहीं वर्ष १९५६ से आप चार्टर्ड एकाउंटेंट के रूप में मान्यता प्राप्त हैं। आप संस्थान के आधार स्तंभ सदस्यों में से एक थे। आप कुशल आध्यात्मिक वक्ता, लेखक होने के साथ बहुत अच्छे मार्गदर्शक थे। ब्रह्माकुमारीज़ की सहयोगी संस्था राजयोग शिक्षा एवं अनुसंधान फाउंडेशन के आप सचिव थे और ब्रह्माकुमारीज़ की एपेक्स कमेटी (उच्च समिति) के सदस्य थे। एकाउंट विभाग के आप प्रमुख थे। संस्थान के मुख्य प्रवक्ता और राजनीतिज्ञ सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी थे। आप गीताज्ञान विशेषज्ञ थे। एक वर्ष पूर्व राजयोगी निर्वैर भाई के निधन के बाद आपको महासचिव नियुक्त किया गया था। इसके पहले आप अतिरिक्त महासचिव के रूप में सेवाएं दे रहे थे। आपका प्रेरक, दिव्य व्यक्तित्व सदा सभी के दिल में अमर रहेगा।

बचपन से ही अध्यात्म में रुचि

राजयोगी बृजमोहन भाई की बचपन से ही अध्यात्म में रुचि थी। उन्होंने अपने जीवन में अनेक धर्म ग्रंथों का पठन-पाठन किया। वर्ष १९५५ में, २२ वर्ष की उम्र में ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आने के बाद आपके जीवन की दिशा ही बदल गई। यहां राजयोग मेडिटेशन सीखने के बाद आपने ब्रह्मचर्य व्रत लेते हुए विश्व सेवा का संकल्प किया। कुछ समय तक आप संस्था से जुड़े रहते हुए जॉब करते रहे। भारत सरकार के फर्टिलाइज़र कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया में १७ वर्ष तक सेवाएं देने के बाद, वर्ष १९७३ में वित्त प्रबंधक के पद से इस्तीफा देकर आप संस्था में पूर्ण रूप से जुड़ गए।

विश्वभर में अनेक सम्मेलनों में ब्रह्माकुमारीज़ का प्रतिनिधित्व किया

आपने संस्थान द्वारा विश्वभर में आयोजित होने वाले अनेक सभा, सम्मेलनों में भाग लिया और मुख्य वक्ता के रूप में जन-जन को आध्यात्मिक ज्ञान से परिचित कराया। संयुक्त राष्ट्र न्यूयॉर्क में आयोजित सम्मेलनों में ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से प्रतिनिधित्व भी किया। साथ ही रूस, अमेरिका, कनाडा, दक्षिण अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, केन्या, दक्षिण-पूर्व एशिया एवं कैरेबियन देशों का दौरा कर लोगों को भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का संदेश दिया।

हास्य और बुद्धिमत्ता के बेजोड़ संगम

आपको बचपन से ही पढ़ने-लिखने का शौक रहा। इसके चलते आपकी श्रीमद् भगवत गीता के पठन-पाठन में विशेष रुचि रही। आपने बहुत ही गहराई से गीता का अध्ययन किया। आपके ज्यादातर कार्यक्रम गीता ज्ञान पर आधारित होते थे। आपका मानना था कि श्रीमद् भगवत गीता में जीवन का सार समाया हुआ है। इसका ज्ञान जन-जन तक पहुंचाने से ही लोगों में आत्मिक जागृति और आध्यात्मिकता के प्रति लगन पैदा होगी। इसके अलावा आप गहन आध्यात्मिक सत्यों को हास्य और बुद्धिमत्ता के साथ सरल रूप में प्रस्तुत करने के लिए प्रसिद्ध थे।

२ वर्ष की उम्र में ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आने के बाद आपके जीवन की दिशा ही बदल गई। यहां राजयोग मेडिटेशन सीखने के बाद आपने ब्रह्मचर्य व्रत लेते हुए विश्व सेवा का संकल्प किया।

राजयोगी भ्राता बृजमोहन भाई जी ने प्रेम, शान्ति, शुभभावना तथा सेवा का प्रकाश सम्पूर्ण विश्व में अनवरत फैलाया है। आपका दिव्य व आकर्षक व्यक्तित्व मानवता के लिए प्रेरणा है। ऐसी महान यज्ञ स्नेही समर्पित आत्मा को देश-विदेश का पूरा ब्राह्मण परिवार अपनी स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

बी के आत्मप्रकाश भाई
(संपादक ज्ञानमृत और the world renewal के संपादक, ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया विंग के सभ्य)

त्याग तपस्या और सेवा की सजीव मूर्ति भ्राता बृजमोहन जी : बीके अशोकभाई

त्याग, तपस्या और सेवा की सजीव मूर्ति भ्राता बृजमोहन जी की अव्यक्त पालना देश विदेश के भाई बहने सदा अनुभव करते रहेंगे। जो भी ओ.आर.सी. जाएंगे आप की दिव्यता के प्रकंपन अनुभव करेंगे।

आप के आदर्श जीवन एवं शिक्षाओं की अविस्मरणीय यादें हमें दिव्यता की ओर प्रेरित करती रहेगी। साकार बाबा एवं आप के पद चिन्हों पर सभी ब्रह्मा वत्स चलते रहेंगे, यही बी के अशोक एवं सर्व मधुबन निवासी तथा ओ.आर.सी. निवासी भाई बहनों की सच्ची श्रद्धांजलि हैं।

ब्रह्माकुमार अशोकभाई
(पांडव भवन वाले)

सुख शांति समृद्धि

सुख शांति समृद्धि प्राप्त करने की कला सीखाती विद्यापीठ

संपादक : जीतु सोमपुरा
+91 9324446487

सहायक संपादक : आकाश सोमपुरा

प्यारे बृजमोहन भाई जी हमारे न्यारे निराले थे

एक फरिश्ता हंसते गाते प्रभु आंचल में सो गया
जैसे लहराता समंदर शांत सा वो हो गया
दैवी नभ के दमकते आप दिव्य सितारे थे
प्यारे बृजमोहन भाई जी हमारे न्यारे निराले थे

सारे बृज को मोहने वाले सारे कहते हमारे थे
बाबा मां के लाडले सब आप पे करते नाज थे
सहज थे और सरल थे आप खुश मिजाज थे
दैवी कुल के ताज थे सुख साज थे आवाज थे
गीत और संगीत के बेताज बादशाह थे

आपसे मिलकर खुशी में नाचते हम सारे थे
अमृतवेला और मुरली पक्के दो पतवार थे
बाबा मां के अनुभव के देते सदा सौगात थे
ज्ञान की गहराई थी तो योग की ऊंचाई थी
धारणा पर ध्यान सेवा बुलंदियों पर लाई थी
शिव बाबा की शिक्षाओं को जीवन में उतारे थे

यज्ञ के आधार थे सेवा स्वर्णिम इतिहास लिखा
और लेखा विभाग को चुस्त दुरुस्त साफ रखा
गीता के भगवान को प्रत्यक्ष करके रहना है
राजनीति में राजयोग से सुनीति भरना है
आनंद शब्द से प्यार था आनंद को भी प्यारे थे

दादियां सारी चली इक हंस हसंते चल दिया
अंत तक संकल्प समय श्वास को सफल किया
उपकृत रहेगा विश्व सारा आपने दी सेवांजलि
हम सारे ब्रह्मा वत्सो की स्वीकारिए श्रद्धांजलि
साथ है और साथ रहेंगे सदा ही साथ हमारे थे

ब्रह्माकुमार सतीशचंद्र सरल
(मधुबन)

प्रणाम

ब्रह्मकुमारीज़ संस्थान के वरिष्ठ स्तंभ आदरणीय राजयोगी बृजमोहन भाईजी के श्रद्धांजलि विशेषांक को प्रेरणा - मार्गदर्शन देने के लिए भारत के बड़े बड़े धार्मिक आध्यात्मिक संस्थानों के प्रचार प्रसार क्षेत्र के भीष्मपितामह महासचिव राजयोगी कर्मयोगी बीके करुणा भाई जी का सुख शांति समृद्धि पत्रिका परिवार आभारी है।

प्रभुपालना का प्रैक्टिकल,
रूप आपने समझाया।
नयनों में समाकर बाबा को,
दिल के दर्पण में दिखलाया।

मिलकर आपसे हर कोई,
होता गदगद दो बोल से,
यज्ञ कहानी उन्हें सुनाते,
दिल के दरवाजे खोल के,
हिलती डुलती जो नांव कभी,
तो पार आपने करवाया।
नयनों में समाकर बाबा को,
दिल के दर्पण में दिखलाया।

प्रभुपालना का प्रैक्टिकल,
रूप आपने समझाया।
नयनों में समाकर बाबा को,
दिल के दर्पण में दिखलाया।

चारों ही विषयों मेंअव्वल,
खुद करके दिखलाते,
विश्व सेवा के प्लान बनाकर,
खुद प्रैक्टिकल में लाते,
सुनते सुनाते, लिखते लिखाते,
ज्ञान का राज़ समझाया।
नयनों में समाकर बाबा को,
दिल के दर्पण में दिखलाया।

प्रभुपालना का प्रैक्टिकल,
रूप आपने समझाया।
नयनों में समाकर बाबा को,
दिल के दर्पण में दिखलाया।

भारी बातों को हल्का कर,
चेहरा सबका चमकाते,
बाबा बैठा है हो जाएगा,
विश्वास सबको दिलाते,
निश्चिंत रहे, निश्चिंत किया,
बेफिकर बादशाह कहलाया।
नयनों में समाकर बाबा को,
दिल के दर्पण में दिखलाया।

प्रभुपालना का प्रैक्टिकल,
रूप आपने समझाया।
नयनों में समाकर बाबा को,
दिल के दर्पण में दिखलाया।

नयनों में समाकर बाबा को,
दिल के दर्पण में दिखलाया।

ब्रह्माकुमार सीए ललित
(मधुबन)

इतनी जल्दी क्या थी आपको ब्रिज मोहन भाई जी जाने की

इतनी जल्दी क्या थी आपको
ब्रिज मोहन भाई जी जाने की
बहुत सी बाते हमको थी करनी
कुछ सुनने कुछ सुनाने की
एक नहीं अनेकों के दिल में
पल भर घर कर जाते थे
जहां जहां भी कदम है डाले
स्वर्ग की भासना लाते थे
पेड़ और पतिया डाली डाली
पंछी भी आपको याद करे
बहुत सी बाते..
यज्ञ की सारी वरिष्ठ बहने
आपको हर पल याद करे
छोटी बहने ईक कोने में
आखों से बरसात करे
आपने भ्राता जी सदा किए
बेहद के कमाल है
बहुत सी बाते..
नाम है आपका ब्रिज मोहन भाई
यज्ञ में ब्रिज का काम किया
चारो दिशाए आपको निहारे
सबके दिलों पे राज किया
भूल न पायेंगे भ्राता जी आपको
जब तक सूरज चाँद रहेगा
बहुत सी बाते

जय गोपाल लूथरा
(गायक-चंडीगढ़)

ईश्वरीय वरदान पाते-पाते स्वयं ही वरदानी रूप बन गए थे

भ्राता जी के सम्पर्क में आते ही जीवन एक उत्सव है, हर आत्मा ऐसा अनुभव करती थी क्योंकि वो स्वयं ही सदा खुशी उमंग से भरपूर रह कर सबको उन्हीं लहरों में लहराते थे। अपने ही रंग में ऐसा रंग देते थे तो परिस्थितियों में घिरा हुआ व्यक्ति महसूस करता था कि अरे! है तो कुछ भी नहीं, छोटी सी तो बात है, सब कुछ अच्छा ही तो है, सब कुछ आसान ही तो है, रोता हुआ भी आता तो हंसता हुआ जाता था।ङ्करशिया में बाल्टिक, यूक्रेन सम्बधित सेवाओं के निमित्त दो वार उनका आना हुआ और हजारों लोगों ने उनके अनुभवों का मार्गदर्शन प्राप्त किया उनका हर रूप सम्पूर्ण और श्रेष्ठतम सदा रहा जैसे कि उनके लिए प्रत्येक कार्य पहले से ही सम्पन्न हुआ पड़ा है। सफलता जैसे कि उनके गले का हार बन गई थी।

ईश्वरीय वरदान पाते-पाते स्वयं ही वरदानी रूप बन गए थे।

बीके संतोष दीदी
(डायरेक्टर, ब्रह्मकुमारीज़ सेंट पीटर्सबर्ग, रशिया)

भाई साब लॉफुल, लव फुल और लॉजिकल थे

ओम शांति,

आदरणीय बृजमोहन भाई साहेब लॉफुल, लव फुल और लॉजिकल थे जब भी कभी भाई साहेब के पास जाते थे तब हर समस्या का समाधान मिलता था, नया कुछ न कुछ सिखने को मिलता था और प्रेरणाएं मिलती थी ऐसे महान भाई साहेब को लीगल डिपार्टमेंट और जूरिस्ट विंग की तरफ से भावपूर्ण श्रद्धांजलि...

बीके लता बहन

आपका जीवन ही एक संदेश था – सेवा ही साधना है, और सेवा में ही सच्चा योग है : बीके हरिलाल

बृजमोहन भाई जी से लगभग चार दशकों का संबंध केवल परिचय का नहीं, बल्कि गहरी आत्मीयता, सहयोग और ईश्वरीय सेवाभाव का प्रतीक रहा है।

जब से आप नियमित रूप से गॉडलीवुड स्टूडियो में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रमों की शूटिंग के लिए आते रहे, और हर बार अपने स्नेह, सरलता तथा गहन ज्ञान से वातावरण को अलौकिक बना देते थे।

एक विशेष अवसर स्मरण आता है, जब गॉडलीवुड स्टूडियो के स्टूडियो 'उ' में अमूल्य रत्न कार्यक्रम के एक हजार एपिसोड पूर्ण होने पर उत्सव आयोजित किया गया था। उस अवसर पर आपने अपने उद्बोधन में कहा था - एक ओर स्टूडियो की सेवा और दूसरी ओर शांतिवन की सेवा - दोनों समान हैं।

आपके इन प्रेरणादायक शब्दों ने हम सभी के मनोबल को ऊँचाइयों तक पहुँचाया और हमारी सेवाओं में नई ऊर्जा का संचार किया।

बृजमोहन भाई जी ने गॉडलीवुड स्टूडियो के माध्यम से परमपिता परमात्मा शिव द्वारा प्रदत्त गीता के भगवान को सिद्ध करने की विशेष सेवा को सार्थक करते हुए हजारों एपिसोड्स का निर्माण किया। यह कार्य न केवल बापदादा की प्रत्यक्षता का द्योतक रहा, बल्कि ईश्वरीय इतिहास में एक स्वर्णिम मील का पत्थर सिद्ध हुआ। आपके द्वारा निर्मित प्रमुख और अत्यंत लोकप्रिय कार्यक्रम - जैसे अंधकार से प्रकाश की ओर (टैगलाइन: सच्ची गीता सार), मुरली मंथन, अव्यक्त वाणी आधारित कार्यक्रम, कोरोना से डरो ना, जीवन सुखी जीवन बने, भगवद् गीता सार संगोष्ठी तथा सच्ची मन की शांति - आज भी लाखों आत्माओं के हृदय में गहराई से अंकित हैं।

आपकी सहज, मधुर मुस्कान के साथ गूढ़तम ईश्वरीय ज्ञान को सरलता और सहजता से अभिव्यक्त करने की कला ही इन कार्यक्रमों की सबसे बड़ी विशेषता रही है। आपके शब्दों में ज्ञान था, भाव था, और हर वाक्य में अनुभव की गहराई झलकती थी।

आपने केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में स्थित ब्रह्माकुमारी केंद्रों के लिए भी वीडियो संदेशों और उद्घाटन कार्यक्रमों के माध्यम से परमात्म प्रत्यक्षता का झंडा ऊँचा किया।

आपका जीवन ही एक संदेश था - सेवा ही साधना है, और सेवा में ही सच्चा योग है।

यह प्रेरणादायक तथ्य है कि आप अपने स्वास्थ्य में गिरावट आने के कुछ दिन पूर्व तक भी नियमित रूप से स्टूडियो आकर शूटिंग करते रहे। आपकी यह सेवा-निष्ठा, अनुशासन और ईश्वरीय श्रीमत पर दृढ़ विश्वास हमारे लिए सच्ची प्रेरणा का स्रोत है।

गॉडलीवुड स्टूडियो परिवार आपकी अमूल्य सेवाओं, अटूट समर्पण और प्रेममय सान्निध्य के लिए हृदयपूर्वक कृतज्ञता व्यक्त करता है। आपने अपने जीवन द्वारा यह सिद्ध किया कि - परमात्म सेवा में जीवन का हर क्षण ही अमूल्य रत्न है।

ईश्वरीय सेवाओं में आपके योगदान को हम सदा आदरपूर्वक स्मरण करेंगे।

ब्रह्माकुमार हरिलाल भानुशाली

बृजमोहन भाई का जीवन संदेश : सच्ची साधना वही है जो स्वयं के परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की दिशा में प्रवाह बन जाए

आज हम महादेवनगर सबज़ोन के सभी भाई-बहनें गहन श्रद्धा और भाव-विभोर हृदय से स्मरण करते हैं राजयोगी ब्रह्माकुमार बृजमोहन भाईजी का - जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन ईश्वरीय सेवा, मानव कल्याण और आध्यात्मिक मूल्यों के प्रसार के लिए समर्पित किया। आपका जीवन एक प्रेरणा था - कर्मनिष्ठा, सादगी, विनम्रता और ईश्वर-प्रेम की अद्भुत मिसाल। आपने राजयोग साधना के माध्यम से न केवल स्वयं को परमात्मा के सच्चे स्नेह में स्थित किया, बल्कि असंख्य आत्माओं को भी शांति, शक्ति और आत्म-साक्षात्कार की अनुभूति कराई। सेवा आपके श्वासों में थी। देश-विदेश में ब्रह्माकुमारीज की सेवाओं को विस्तार देने में आपका योगदान अविस्मरणीय है। आपने अनेक सेवा प्रोजेक्ट्स के निर्माण में निमित्त एवं सहयोगी बनें, जो आज भी लाखों लोगों के जीवन में उजाला फैला रहे हैं। आज भले ही आपने यह पुराना देह त्याग दिया हो, पर आपकी दिव्य स्मृति, आपकी शिक्षा और आपकी सेवा-संस्कार सदा हमारे हृदयों में जीवित रहेंगे।

आपका जीवन संदेश हमें सदैव यह प्रेरणा देता रहेगा -कि सच्ची साधना वही है जो स्वयं के परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की दिशा में प्रवाह बन जाए।

आपकी आत्मा निश्चित रूप से परमात्मा की गोद में शिव-सान्निध्य का परमानंद अनुभव कर रही है। आपको महादेव नगर सबज़ोन की फुलवारी की और से शत-शत स्नेहांजलि अर्पण करते हैं।

बीके चंद्रिका बहन
(महादेवनगर सबज़ोन, अहमदावाद)

सुख शांति समृद्धि हिन्दी मासिक समाचार पत्र, स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : जितू सोमपुरा (मो.९३२४४४६४८७) ने सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, गाला नं. ४. एन.के. इंडस्ट्रियल एस्टेट. प्रवासी इंडस्ट्रियल एस्टेट के अंदर, गेट नं. २, गोरेगांव (ईस्ट), मुंबई ६३. से मुद्रित कर १४०१, रुद्राक्ष एनक्लेव, वैद्य नगर, दत्ताणी स्कूल के सामने, टाटा पावर हाउस, बोरीवली (पूर्व) मुंबई महाराष्ट्र से प्रकाशित किया।

सुख शांति समृद्धि

सुख शांति समृद्धि प्राप्त करने की कला सीखाती विद्यापीठ

संपादक : जीतु सोमपुरा +91 9324446487

सहायक संपादक : आकाश सोमपुरा

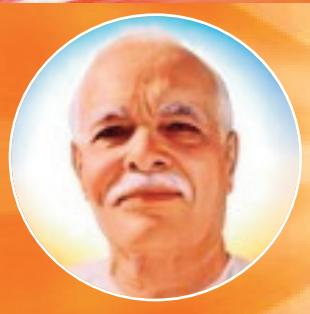

सुविचार

- किसी का दुःख बांटने का सबसे सुंदर तरीका है... स्वयं स्थिर रहना।
- जब परिस्थिति नहीं बदल सकते, तब अपनी सोच बदलें और वही हमारी शक्ति है।
- दूसरों से नहीं, अपने नजरिए से जिंदगी खूबसूरत बनती है।
- अगर खुद से बातचीत मीठी हो जाए, तो दुनिया की कड़वाहट असर नहीं करती।
- खुद को साबित नहीं, सिर्फ स्वीकार करना सीखिए।
- विवाद रिश्तों में नहीं, सोच में होता है, सोच बदलिए, संबंध बदल जाएंगे।
- सुनना, समझना और सम्मान देना ही सच्चा प्रभाव है।
- रिश्तों की सुंदरता यही है कि हम सच बोलें, पर शब्द ऐसे हों कि किसी का दिल न टूटे।
- भाग्य की शिकायत करने से बेहतर है, कर्म को संवारना।
- छोटी-छोटी बातों को बड़ा बनाना, अपनी खुशी की चोरी है।
- दूसरों को खुशी देने का सबसे आसान तरीका है... खुद हमेशा खुश रहना।
- जो रिश्ते दिल से निभाए जाते हैं, वो एक 'सॉरी' से नहीं-एक 'समझ' से चलते हैं।
- अतीत का पन्ना बंद हो चुका है, अब केवल वर्तमान की रोशनी लिख रही है भविष्य।
- हीलिंग उनके माफी माँगने से नहीं, हमारे विचार बदलने से शुरु होती है।
- आत्मा को कोई अपमानित नहीं कर सकता, आहत होता है केवल अहंकार।
- अपेक्षा नहीं, देने का संकल्प ही रिश्तों को नया जीवन देता है।
- दूसरों के गुण देखे, कमजोरियां नहीं। पॉजिटिव सोच हल्कापन और दुआ देती है।
- खुश रहना सफलता का परिणाम नहीं, बल्कि सफलता का कारण है।
- जो है उसे अपनाने में ही तनाव और निराशा पर विजय छुपी है।
- दुआओं का कवच हो साथ, तो नज़रें भी आशीर्वाद बन जाती हैं।
- जब नजरिया साफ होगा, लोग और लम्हे खूबसूरत दिखेंगे।
- उनकी गलती उनका बोझ है, उसे उठाना मेरी ज़िम्मेदारी नहीं।
- अपमान तब तक ही है, जब तक हम उसे स्वीकार करते हैं।
- थोडा समय निकालिए, खुद के साथ बैठिए... खुद को सुनिए, खुद को समझिए
- क्षमा करना अपनी शक्ति को बढ़ाना है, दर्द को बांधना नहीं।
- बीते कल को मत दो आज की खुशी चुराने को मौका।

2026

January

su	mo	tu	we	th	fr	sa
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

February

su	mo	tu	we	th	fr	sa
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28

March

su	mo	tu	we	th	fr	sa
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

April

su	mo	tu	we	th	fr	sa
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

May

su	mo	tu	we	th	fr	sa
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

June

su	mo	tu	we	th	fr	sa
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

July

su	mo	tu	we	th	fr	sa
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

August

su	mo	tu	we	th	fr	sa
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

September

su	mo	tu	we	th	fr	sa
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

October

su	mo	tu	we	th	fr	sa
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

November

su	mo	tu	we	th	fr	sa
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

December

su	mo	tu	we	th	fr	sa
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		